Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.3
ISSN No. 2456-1665

गोदान उपन्यास 'होरी' का जीवन

डॉ. बिक्कड ए. एस.
हिन्दी विभाग
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला, वाणिज्य एवं
विज्ञान महाविद्यालय, जालना

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के महान लेखक थे, जिन्हे 'उपन्यास सम्राट के रुप में जाना जाता है। प्रेमचंद ने यथार्थवाद को प्रमुखता दी है। उन्होंने सामाजिक समस्याओं, किसानों के जीवन को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद का 'गोदान' हिन्दी साहित्य में महान उपन्यास है। इस उपन्यास ग्रामिण जीवन को प्रस्तुत करनेवाली कृति है। इस उपन्यास में प्रेमचंद का संपूर्ण जीवन चित्रित होता है। उन्होंने अपने अंतिम पड़ाव में प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की। प्रेमचंदने 1934 में गोदान उपन्यास को लिखना आरंभ किया था। हिन्दी साहित्य की गोदान प्रसिद्ध उपलब्धि है। प्रेमचंद के पहले उपन्यास केवल उपदेश्वादी और सुधारवादी थे। इन उपन्यासों का मूल उद्देश्य केवल मनोरंजन था। गोदान उपन्यास के बाद सही अर्थो में उपन्यास साहित्य परिपक्व हो गया।

भारत कृषि प्रदान देश है। देश का साहित्य और साहित्यकार का मूल विषय कृषि और किसान का जीवन नहीं था। उस देश के साहित्यकारों को सजग बनाना चाहते है। यहाँ की जनता 60 से 70 प्रतिशत खेतीपर आधारित है। प्रेमचंदने गोदान उपन्यास में शोषित किसानों का पक्ष लिया है। किसानों का कैसा शोषण किया जाता है। जंतर मंतर पर किसानों का प्रदर्शन, मध्य प्रदेश में बेकसूर किसानों पर गोलीबारी, किसानों की आत्महत्या, भूखमारी, यह सब किसानों का बयान है। यह समस्या प्रेमचंद के युग में थी वह आज भी भारत देश में है। प्रेमचंद की गोदान उपन्यास इन समस्याओं को व्यक्त करता है। केवल गोदान ही नहीं तो अन्य उपन्यास भी किसान समस्याओं पर लिखे है। जैसे प्रेमाश्रम में बेदखली और इजाफा लगान पर कर्मभूमि में बढ़ते हुए आर्थिक संकट

उसी तरह से अन्य समस्याओं उजागर किया है। इसके संबंध में रामविलास वर्मा का वक्तव्य है- "गोदान में किसानों के शोषण का रुप ही दूसरा है। यहाँ सीधे-सीधे राय साहब के कारिंदे होरी का घर लूटने नहीं पहूँचते लेकिन उसका घर लूट जरुर जाता है। होरी के विरोधी बड़े सतर्क है। वे ऐसा काम करने में झिझकते हैं जिससे होरी दस-पाँच को इकट्ठा करके उनका मुकाबला करने को तैयार हो जाए। वह उनके चंगुल में फँस कर तिल तिल कर मरता है लेकिन समझ नहीं पाता कि यह सब क्यों हो रहा है। वह तकदीर को दोष दे कर रह जाता है समझता है, यह सब भाग्य का खेल है, मनुष्य का इसमें कोई दोस नही। जमींदार और सामंतवादी लोक कुव्यवस्था से किसान को अंदर से खोखला कर देती है। किसान को उसका पता तक नहीं चलता की वह कब गिर गया। 'गोदान' का 'होरी' किसान का प्रतिनिधित्व करता है। किसान वर्ग इन पूँजीपतियों से कैसा पिसा जाता है इसका जिता जागता उदाहरण होरी है। गोदान फी गति धीमी है होरी की तरह। उपर से शांत दिखता है परंतु अंदर से किसान वर्ग को पूरी तरह से नष्ट किया जाता है।

प्रेमचंद राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को समाज के वंचित किसान, महिला, दलित मजदूर आदि का हित देखते हैं। वे आजादी पाना और अच्छा राष्ट्र बनाना संभव है। राजनीतिक स्तरपर यह काम महात्मा गांधीने किया है। प्रेमचंदने यह काम साहित्य के माध्यम से किया है। गोदान को होरी का जीवन इतना दयनीय है कि वह चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता वह धनिया से कहता है - "जब दूसरे के पावों-तलें अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पाँवों को सहलाने में ही कुशलता है।"

इन लोगों को मालूम है कि होरी आर्थिक संकट में फँसता है, यह जानकर महाजन उसे कर्ज देने के लिए पहुँच जाते है। कर्ज में डूब ने के बाद भी होरी आत्महत्या नहीं करता। क्योंकि यह प्रवृत्ति भारतीय किसान की नहीं है। आज के युग में किसान वर्ग अधिक से अधिक आत्महत्या करने लगा है। आज का किसान वर्ग होरी के जैसा हिमंतवाले नहीं है। इस संदर्भ में डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं -

"प्रेमाश्रम के बलराज और मनोहर किसानों को उन्होंने बहुत अधिक विद्रोही दिखाया था, लेकिन होरी को उन्होंने संतोष, धैर्य, सहनशीलता तथा अंधविश्वास का पुँज दिखलाया, जो भारतीय किसानों की जातीय विशेषता है। यदि किसान आंदोलन की ओर ध्यान दे तो 'प्रेमाश्रम' के सत्र-अठ्ठारह वर्षो के बाद लिखे हुए 'गोदान' में किसान को अधिक विद्रोही दिखाना चाहिए या लेकिन वास्तविकता यह थी की तमाम आंदोलनों के बावजूद भारतीय किसान काफी संतोषी, भाग्यवादी और धैर्यवान रहा है। अपने अनुभवों से प्रेमचंदने इ. स. 1921 को अंत में समझा और होरी के रुप में उन्होंने ऐसे ही किसान का चित्रण किया जो तमाम किसानों का प्रतिनिधित्व हो सका।"

गोदान में प्रेमचंद ने किसान वर्ग की आवस्था को उपन्यास के माध्यम से चित्रित किया है। जमींदार, सामंत, साहूकार किसान वर्ग का कैसे शोषण करता है यही इस उपन्यास से स्पष्ट होता है।

संदर्भ सूची :

1. प्रेमचंद और उनका युग - डॉ. रामविलास शर्मा, पेज नं. 97
2. प्रेमचंद और उनका युग - डॉ. रामविलास शर्मा, पेज नं. 97
3. गोदान - प्रेमचंद वाणी प्रकाशन - पेज नं. 5